-: कहानी :-

"कर्तव्य"

ए. एस. बलगीर
दिनांक: 24.3.88

एक महात्मा नदिया के किनारे सैर कर रहे थे । अचानक उन्होंने एक बिच्छू को पानी में डूबते हुए देखा । वे तुरन्त उसे बचाने के लिए किनारे के पास बैठ गये और उसको हाथ से पकड़कर पानी से बाहर निकालने लगे । जैसे ही बिच्छू को बाहर निकाला, उसने महात्मा के हाथ पर काट लिया । महात्मा जी ने तनी-चार बार बिच्छू को पानी से बाहर निकाला मगर हर बार बिच्छू महात्मा जी की ऊँगली काट कर पानी में फिर कूद जाता ।

महात्मा जी को एक गाँव मे आदमी काफी देर से बिच्छू की जान को बचाते हुए देख रहे थे । अतः उनसे रहा न गया । और बोले "महात्मा जी जितनी बार भी आपने बिच्छू की जान बचाने की कौशिश की है उतनी बार ही ~~की~~ बिच्छू ने आपकी ऊँगली को काटा और काटकर फिर पानी में कूद जाता रहा है । आपको ऐंसा करने का क्या फल मिल रहा है"। महात्मा जी ने उत्तर दिया, "मेरा धर्म कहता है कि मैं किसी को डूबते को बचाऊं ताकि उसकी जान बच जाये, मगर बिच्छू अपनी जगह पर ठीक है । वह काटने की आदत से मजबूर है मगर मैं बचाने की आदत से मजबूर हूँ" । मैं अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ और वह अपने कर्तव्य का पालन कर रहा है ।

शिक्षा :-

हमें हमेशा अपना कर्तव्य ठीक ढंग से निभाना चाहिये । यह कभी नहीं सोचना चाहिये कि उसका क्या फल मिलेगा । बुरा फल भी मिल सकता है मगर हमें अच्छे रास्ते पर ही चलना चाहिये ।